ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 13 कुल पृष्ठ-8 28 जुलाई से 3 अगस्त, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 आ. कृ.-15

विश्वविख्यात यज्ञ तीर्थ, आर्ष गुरुकुल एटा के मुख्याधिष्ठाता, आर्य समाज के मनीषी विद्वान्, प्रसिद्ध समाजसेवी, हजारों विद्वान् स्नातकों के प्रेरणास्रोत आचार्य देवराज शास्त्री जी की स्मृति में विशाल प्रेरणा सभा सम्पन्न

आर्य जगत के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के अध्यक्ष एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने किया संयोजन

श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, विश्वविख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं प्रखर वक्ता युवा विद्वान् संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य जी, गुरुकुल के आचार्य लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् डॉ. वागीश शर्मा जी, डॉ. विनय विद्यालंकार जी, पूर्व सांसद श्री कैलाश यादव जी, गुरुकुल एटा के प्रधान श्री योगराज अरोड़ा जी आदि ने सभा को किया सम्बोधित

आचार्य देवराज शास्त्री के सुपुत्र श्री मेधाव्रत शास्त्री ने किया सभी का धन्यवाद ज्ञापित

आर्य जगत् के मनीषी विद्वान् आर्ष गुरुकुल, एटा के मुख्याधिष्ठाता तथा हजारों विद्वान् स्नातकों के प्रेरणास्रोत प्रसिद्ध समाजसेवी आचार्य देवराज शास्त्री जी की स्मृति में दिनांक 25 जुलाई, 2022 सोमवार को प्रातः 10 बजे से शांति यज्ञ एवं प्रेरणा सभा का विशाल आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विभिन्न स्थानों तथा एटा जिले के सैकड़ों गाँवों से हजारों की संख्या में लोगों ने पहुँचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रेरणा सभा की अध्यक्षता आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की और इसका कुशल संचालन वैदिक कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ एवं आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने संभाला। प्रेरणा सभा से पूर्व शांति यज्ञ सम्पन्न किया गया जिसमें आचार्य वागीश शर्मा यज्ञ के ब्रह्मा पद पर सुशोभित हुए और उनके साथ श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य सुखवीर शास्त्री (मुम्बई), श्री वीरपाल शास्त्री, श्री संतोष कुमार शास्त्री, श्री यशपाल शास्त्री, श्री लक्ष्मण कुमार शास्त्री, डॉ. विजेन्द्र, डॉ. धर्मेन्द्र, डॉ. अवनीश, श्री अंकित शास्त्री आदि के अतिरिक्त उपस्थित स्नातकों ने वेद पाठ कर सहयोग किया। यज्ञ के उपरान्त प्रेरणा सभा विधिवत रूप से प्रारम्भ हुई।

आर्य समाज के गौरव एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रीय जी ने अपने ओजस्वी एवं प्रभावशाली व्याख्यान द्वारा स्व. आचार्य देवराज शास्त्री जी को दी गई श्रद्धांजलि उपस्थित विशाल जनसमूह के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक रही। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि स्व. देवराज शास्त्री जी आप सभी के ऊपर यह दायित्व सौंपकर गये हैं कि आर्ष गुरुकुल एटा को अपना भरपूर सहयोग देकर पल्लवित और पुष्पित करते रहना। श्रोत्रिय जी ने कहा कि इस गुरुकुल की सुरक्षा एवं उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि शास्त्री जी के समान मजबूत एवं समर्पित व्यक्तित्व गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता के पद को संभाले। इसके लिए अपने पिता के द्वारा दिये गये संस्कारों से ओत–प्रोत प्रिय भाई मेधाव्रत शास्त्री जी यदि मन बना लें तो इस गुरुकुल का भविष्य निश्चित ही उज्जवल हो सकता है। श्रोत्रिय जी ने आचार्य देवराज शास्त्री जी को एक मजबूत स्तम्भ एवं तपस्वी विद्वान् बताते हुए कहा कि उन्होंने अपना पूरा जीवन गुरुकुल के लिए समर्पित करके हजारों विद्वान् स्नातकों को प्रेरित किया और देश–विदेश में प्रचार कार्य में भेजा। उनके निधन से न केवल गुरुकुल बल्कि पूरे आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आचार्य देवराज शास्त्री को आर्ष शिक्षा का एक मजबूत प्रहरी बताया और उनके निधन को आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति मानते हुए कहा कि हमें इस क्षति को पूरा करने के लिए कृत–संकल्प होना चाहिए।

मंच का संचालन कर रहे आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने आचार्य देवराज शास्त्री के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वे गुरुकुल एटा के एक मजबूत स्तम्भ थे, उनके निधन से गुरुकुल को जबरदस्त आघात पहुँचा है। हम सभी आज उनके निधन से दुःखी हैं, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन का एक–एक श्वांस इस गुरुकुल की उन्नति के लिए लगाया। ऐसे समर्पित व्यक्तित्व बहुत कम मिलते हैं। श्री शास्त्री जी ने कहा कि आचार्य देवराज जी के पूज्य पिता जी ने जब उन्हें गुरुकुल में दाखिल कराया तो इस गुरुकुल के संस्थापक वीतराग संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी जी ने उनके पिता जी से कहा कि वे अपने इस पुत्र को गुरुकुल के लिए उन्हें सौंप दें, ज्येष्ठ पुत्र होते हुए भी देवराज जी के पिता जी ने अपने पुत्र को गुरुकुल के लिए समर्पित करके त्याग का एक स्वर्णित उदाहरण प्रस्तुत किया। आचार्य देवराज जी ने गुरुकुल में रहते हुए जहाँ इसकी सुरक्षा की, वहीं पर उन्होंने हजारों विद्वान् स्नातकों को भी आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े रहने की प्रेरणा देकर ऐतिहासिक कार्य किया। आज उनके निधन से गुरुकुल एटा घोर संकट की स्थिति में है। ऐसे में हम सबका दायित्व बनता है कि सभी स्नातक और गुरुकुल के सहयोगी, शुभचिन्तक, मिलकर इसको संभालनें और गुरुकुल को एकबार फिर वही गौरवपूर्ण स्थान प्रदान करायें। जो इसके भूतकाल में रहा है।

श्रद्धांजलि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य देवराज शास्त्री को आर्य समाज का एक मजबूत योद्धा एवं आर्ष शिक्षा प्रणाली का प्रबल प्रहरी बताते हुए कहा कि आचार्य जी आर्य समाज में युवा पीढ़ी को सदैव उत्साहित करते थे। वे आर्य समाज के भविष्य की चिन्ता करते हुए कहा करते थे कि युवाओं को आगे आकर आर्य समाज के दायित्वों को संभालना चाहिए, क्योंकि युवा ही किसी संगठन व राष्ट्र का भविष्य होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि जब स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में आर्य जगत् में हजारों युवाओं का प्रवेश होने लगा और पूरे आर्य जगत् में आशा एवं प्रसन्नता की लहर दौड़ पड़ी उस समय जिन आर्य समाज के विद्वानों, संन्यासियों एवं विचारकों ने उस युवक क्रांति अभियान को अपना हार्दिक समर्थन एवं सहयोग किया था उनमें आचार्य देवराज शास्त्री जी का नाम सबसे अग्रिम पंक्ति में आता है। स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य देवराज जी के देहावसान से हुए रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए मजबूत व्यक्तित्व को दायित्व सौंपने पर बल दिया। उन्होंने आचार्य जी के दोनों सुपुत्रों श्री प्रदीप शास्त्री, श्री मेधाव्रत शास्त्री दोनों सुपुत्रियों को प्रेरणा दी कि वे अपनी पूज्य माता जी की सेवा सुश्रुषा में कोई कमी न आने दें और स्व. आचार्य देवराज जी के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए सर्वात्मना समर्पित भाव से कार्य करें।

प्रेरणा सभा को सम्बोधित करने वालों में सर्वश्री डॉ. सुरेश चन्द्र शास्त्री, डॉ. राम प्रकाश वर्णी, डॉ. विनय विद्यालंकार, डॉ. जसवन्त सिंह, आचार्य रामदेव जी, कन्या गुरुकुल हाथरस की आचार्या डॉ. पवित्रा जी, गुरुकुल सत्यवती की आचार्या धारणा जी तथा अन्य सभी वक्ताओं ने स्व. आचार्य देवराज शास्त्री जी को आर्य समाज का एक जाज्वल्यवान नक्षत्र बताया। प्रेरणा सभा में सम्मिलित जनसमूह ने स्व. देवराज शास्त्री जी के प्रति दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

सच्चरित्रता की पक्की नींव धर्म

– आचार्य श्रवण कुमार (व्याकरण दर्शनाचार्य)

सभी सच्चे धर्मनिष्ठ लोगों में सद्गुण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। ऋषि दयानन्द, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, गुरुनानक, सन्त कबीर, गुरु रामदास इत्यादि महापुरुषों में सद्गुणों की मात्रा इतनी अधिक दिखाई देती है कि साधारण व्यक्ति उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इस प्रकार के धर्मशील महापुरुष अपने प्रभाव से सर्वसाधारण जनता के चारित्रिक मानदण्ड को भी बहुत ऊँचा कर देते हैं। इस प्रकार जनता में चारित्रिक गुण उत्पन्न करने की दृष्टि से धर्म का बड़ा ऊँचा और महत्त्वपूर्ण स्थान है।

धर्म और ईश्वर का विरोध करने वाले लोग कहते हैं कि धर्म को मानने की क्या आवश्यकता है? धर्म को मानने वाले लोग धर्म का यही तो लाभ बताते हैं कि उससे हमारे अन्दर सत्य, न्याय, दया, तप, त्याग और उपकार आदि चरित्र सम्बन्धी सद्गुण उत्पन्न होते हैं। हम इन चरित्र सम्बन्धी सद्गुणों को अपने भीतर धर्म के बिना भी उत्पन्न कर सकते हैं। अनेक नास्तिक लोगों में ये सद्गुण बड़ी ऊँची मात्रा में पाए जाते हैं। हम अपने व्यवहार में इन सद्गुणों का पालन करते रहेंगे। हमें धर्म को मानकर आत्मा, परमात्मा, लोक, परलोक और कर्मफल आदि के जंजाल में पड़ने की क्या आवश्यकता है?

धर्म विरोधियों का यह कथन ऊपर–ऊपर से सुनने में रोचक प्रतीत होता है। गहराई में विचार करने पर पता चलता है कि धर्म को माने बिना, आत्मा–परमात्मा की सत्ता और लोक–परलोक तथा कर्मफल के सिद्धान्त को मानें बिना चरित्र सम्बन्धी सद्गुण खड़े नहीं रह सकते। हमारी सच्चरित्रता आत्मा–परमात्मा और लोक–परलोक तथा कर्मफल के सिद्धान्त के आधार पर ही टिकी हुई है।

यदि हम नास्तिक लोगों की बातें मानकर भौतिकवादी बन जाएँ और यह मानने लग पड़े कि आत्मा नाम की कोई सत्ता नहीं है, जिसे हम आत्मा कहते हैं वह तो प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम है, जिस प्रकार आग और पानी के संयोग का परिणाम जल की उष्णता है। अथवा जैसे पोटैशियम फैरो साइनाइड के हल्के पीले से रंग के घोल में फैरिक क्लोराइड का हल्के पीले से रंग के घाल मिला देने से उसमें गहरा नीला रंग आ जाता है। हमारे उत्पन्न होने से पूर्व हमारा आत्मा नहीं था, और हमारे मर जाने के बाद न कोई अगला जन्म होगा, बस जो कुछ है यह हमारा वर्तमान जन्म ही है। इस जन्म में हम जो कुछ कर लें, कर लें, इस जन्म में हम जो कुछ सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, आगे कुछ नहीं होने और मिलने वाला है, आँख मिची और सब कुछ समाप्त, भौतिकतावादी नास्तिक बनकर यदि हम मानने लग पड़े कि परमात्मा की भी सत्ता कुछ नहीं है – इस जगत् को बनाने वाला और चलाने वाला तथा हमारे कर्मों का फल देने वाला परमात्मा कोई नहीं है तो हमारी सच्चरित्रता ठहर नहीं सकेगी।

जब हमारा केवल यही जन्म है और इसी में हम जो कर लें और जो सुख भोग भोगना चाहें भोग लें, तो हममें बुरे कर्मों से बचने की प्रवृत्ति नहीं होगी। तब हमारे अन्दर यह प्रवृत्ति जाग उठेगी कि यह थोड़ा सा तो समय हमारे पास है जिसमें हम जो सुख भोगना चाहें भोग सकते हैं, इसीलिए जिस किसी तरह भी हमें अपने जीवन को सुखी बनाकर रखना चाहिए। इस प्रवृत्ति के वश में आकर हम अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए बुरे कर्म करने से रोक नहीं पायेंगे। बुरे कर्मों का दण्ड देने वाला परमात्मा तो कोई है ही नहीं, जिसका हमें भय रहे। अगला जन्म भी कोई नहीं है जिसमें हमें बुरे कर्मों का फल भोगना पड़े। तो हमें बुरे कर्मों से बचकर सच्चरित्र बनने की प्रेरणा क्यों होगी?

आत्मा–परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त को न मानकर केवल यही एक जन्म मानने की व्यवस्था में तो हमारा उद्देश्य केवल अपने इस वर्तमान जीवन को सुखी बनाना रह जायेगा। हमें अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए झूठ–फरेब, धोखे–धड़ी और अन्याय–अत्याचार का भी अवलम्बन करना पड़े तो वह कर लेना चाहिए। इस प्रकार के दुराचरणों से हमें क्यों रुकना चाहिए?

कहा जा सकता है कि जैसे हम सुखी बनना चाहते हैं वैसे ही और लोग भी सुखी बनना चाहते हैं। इसलिए झूठ–फरेब आदि का सहारा लेकर हमें दूसरों के जीवन को दुःखी नहीं बनाना चाहिए। परन्तु यदि कोई अपनी यह मनोवृत्ति बना ले कि दूसरे लोग मेरे किसी आचरण से दुःखी होते हैं तो होते रहें, मुझे तो अपने जीवन को सुखी बनाना है। मैं तो जैसे भी होगा अपने को सुखी बनाऊँगा। तो ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकता है? कहा जा सकता है कि दूसरे लोग उसके दुर्व्यवहारों से तंग आकर उसे पकड़ लेंगे और दण्डित करेंगे और इस प्रकार उसे अपने बुरे कर्मों का फल दुःख मिलेगा, अतः उसे बुरे कर्मों से बचने की सीख स्वयं मिल जायेगी कि उसे बुरे कर्मों से बचना चाहिए। परन्तु पकड़ में तो कोई व्यक्ति अपनी असावधानी और गलती से आता है। यदि कोई व्यक्ति पूर्ण सावधान होकर चतुराई और बुद्धिमत्ता से दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करके अपने को सुखी बनाता रहे तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? फिर यदि कोई यह सोच ले कि कभी अपनी असावधानी से पकड़ भी लिया गया और उससे दण्डित होकर कुछ दुःख भोगना भी पड़ गया तो क्या बात है? अधिकतर तो मैं दूसरों को ठग और लूटकर अपने जीवन को सुखी ही रखता हूँ, तो ऐसे व्यक्ति को दुराचरण से कैसे रोका जा सकेगा? यदि हम छिपकर पाप करते हैं? उससे तो हम अपने जीवन को सुखी बना रहे हैं। आत्मा–परमात्मा की सत्ता, पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त को न मानने वाले भौतिकवादी नास्तिकों के पास इन प्रश्नों का कोई समाधान नहीं है।

आत्मा–परमात्मा आदि की सत्ता को स्वीकार न करने की अवस्था में तो मनुष्य की प्रवृत्ति स्वभावतः चार्वाकों की सी हो जायेगी और वह चार्वाकों के स्वर में स्वर मिलाकर कहने लगेगा – 'मौत से कोई भी बच नहीं सकता इसलिए जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए। क्योंकि मरने के बाद जलकर राख हो जाने के पीछे सुख भोगने के लिए शरीर कहाँ से मिलेगा? जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए और अपने को सुखी बनाने के लिए ऋण लेकर भी घी पीते रहना चाहिए।

फिर एक बात और यहाँ विचारने की है। आत्मा और परमात्मा को न मानने की अवस्था में अच्छे और बुरे, सच्चारित्र्य का भेद कैसे किया जा सकेगा? हमारे किसी कर्म को अच्छा या बुरा कहकर उसकी अच्छाई और बुराई का निर्माण करने वाला कोई परमात्मा या आत्मा तो है ही नहीं। भौतिकवादी नास्तिकों के मत में परमात्मा की सत्ता तो बिल्कुल ही नहीं है। आत्मा की भी वास्तविक सत्ता नहीं है। आत्मा या चेतना जो कुछ है केवल प्राकृतिक जड़ पदार्थों के एक विशेष प्रकार के संयोग का परिणाम है। जिस प्रकार आग और जल के एक विशेष संयोग का परिणाम जल की उष्णता है। ऐसी अवस्था में, जिस प्रकार जल की उष्णता प्राकृतिक होने के कारण जड़ ही है, उसी प्रकार हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों के संयोग का परिणाम होने के कारण प्राकृतिक होने से हमारा आत्मा भी वस्तुतः जड़ ही है, ऐसा हमें मानना पड़ेगा और हमें यह भी मानना पड़ेगा कि यह हमारा आत्मा कोई पृथक पदार्थ नहीं, हमारे शरीर के प्राकृतिक पदार्थों में रहने वाला उन पदार्थों का एक गुणमात्र है। तो जिस आत्मा की कोई पृथक् सत्ता ही नहीं है, जो हमारे शरीर के प्राकृतिक जड़ पदार्थों का ही एक गुणमात्र है और जड़ है, वह आत्मा हमारे कर्मों की अच्छाई और बुराई का निर्णय किस प्रकार कर सकेगा? इस प्रकार हमारे कर्मों की अच्छाई या बुराई का निर्णय करने वाली कोई सत्ता न होने के कारण, हमारे कोई भी कर्म अच्छे या बुरे नहीं रहेंगे। हमारे सभी कर्म एक जैसे ही हो जायेंगे। हम जैसा चाहें कर लें। हम किसी के किसी कर्म को दुराचरण या अनैतिक और सदाचरण या नैतिक नहीं कह सकेंगे।

इसलिए धर्म के बिना सच्चरित्रता की नींव खड़ी नहीं रह सकती। धर्म आत्मा को भी मानता है और परमात्मा को भी। आत्मा अपनी स्वतन्त्रता से अच्छे या बुरे कर्म करता है। अपने कर्मों का फल भोगने में आत्मा परमात्मा के अधीन है। बुरे कर्मों का फल आत्मा को परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर दुःख के रूप में भोगना पड़ता है, और अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में। परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मों का फल आवश्यक रूप से कर्मफल भोग से आत्मा बच नहीं सकता है। कर्मफल प्रदाता परमात्मा की व्यवस्था के अधीन रहकर कर्मों का फल आवश्यक रूप से भोगे जाने का यह सिद्धान्त आत्मा को बुरे कर्मों से दूर रहने की प्रेरणा करता है। धर्म में परलोक और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी माना जाता है। यदि इस जन्म में हमें परमात्मा ने हमारे कर्मों का फल दुःख के रूप में नहीं दिया है तो अगले जन्म में दिया जायेगा, उससे छूट नहीं सकते, अगले जन्म में भी फल मिल सकने का यह सिद्धान्त हमारे मन में बुरे कर्मों के प्रति और भी अधिक भय उत्पन्न कर देता है। कर्मफल भोग के इस भय के कारण हम दुराचरणों से बच कर सदाचरण से रहने का प्रयत्न करने लगते हैं। ऐसा करते–करते हम स्वभाव से ही अच्छे आचरण करने वाले बन जाते हैं। परमात्मा के भय के कारण बुरे कर्मों से बचे रहने की बात हमारे मन की पृष्ठभूमि में बहुत गहराई से बैठी रहती है। धर्म सृष्टि के आरम्भ से इस प्रकार हमें सच्चारित्र्य सिखाता आ रहा है।

धर्म द्वारा की जाने वाली अपनी इस सेवा के कारण संसार को धर्म का धन्यवाद करना चाहिए। जिस दिन संसार से धर्म को सर्वथा मिटा दिया जायेगा, जिस दिन लोग आत्मा, परमात्मा, लोक और परलोक को मानना सर्वथा छोड़ देंगे, जिस दिन कर्मफल भोग के सिद्धान्त में लोगों का विश्वास बिल्कुल नहीं रहेगा, जिस दिन परमात्मा की भक्ति द्वारा परमात्मा के गुणों को अपने भीतर धारण करने वाले धर्मनिष्ठ लोग सर्वथा पैदा होना बन्द हो जायेंगे, उस दिन के थोड़े समय के पश्चात् संसार से सच्चरित्रता समाप्त हो जायेगी। आज संसार के लोगों में जितनी सच्चरित्रता दिखती है उसका मूल स्रोत धर्म ही है।

नास्तिक लोगों में जो कुछ सच्चरित्रता दिखाई पड़ती है उसका मूल स्रोत भी धर्म ही है। धर्म द्वारा सिखाए गए, परम्परा से चले आ रहे सच्चरित्रता के तत्त्वों को नास्तिक लोगों ने भी स्वीकार कर लिया है। जैसे गंगा से निकली हुई नहर में से निकली हुई अन्य नहर बहुत दूर के खेतों में जाकर पानी दे देती है और उन खेतों और उनके किसानों को पता नहीं होता कि यह पानी गंगा का है, इसी प्रकार नास्तिकों को भी पता नहीं है उनमें जो सच्चरित्रता है वह मूल रूप में धर्म की गंगा से ही निकलती है। नास्तिकता का दर्शनशास्त्र, जैसा ऊपर दिखाया गया है, स्वयं सच्चरित्रता को जन्म नहीं दे सकता।

जब धर्म नहीं रहेगा तो सच्चरित्रता भी नहीं रहेगी और संसार में अन्धपरम्परा चल पड़ेगी। कोई किसी को सन्मार्ग न दिखा सकेगा। तब संसार के लोगों में मात्स्य – न्याय चलने लगेगा। जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है वैसे ही शक्तिशाली लोग दुर्बल लोगों को खाने लग पड़ेंगे। उस घोर अधर्म की अवस्था में न स्वतन्त्रता रहेगी और न किसी राष्ट्र की किसी प्रकार कोई उन्नति।

परन्तु संसार यह सुनकर निश्चिन्त रहे कि राम, कृष्ण, दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे महापुरुष धर्मनिष्ठ लोगों के समय–समय पर जन्म लेते रहने के कारण वह बुरा दिन कभी न आने पायेगा। धर्म को नास्तिकवाद से भय नहीं है। आत्मा–परमात्मा की सत्ता और पुनर्जन्म तथा कर्मफल के सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए धर्मवालों के पास प्रबल तर्क हैं। पहले भी नास्तिक लोग आते रहे हैं। हम आस्तिक लोग अपने तर्कों से उनकी बातों का खण्डन करते रहे हैं।

यहाँ एक बात और भी देखने की है। सच्चरित्र रहने के लिए हमें सच्चरित्र पुरुषों की संगति की आवश्यकता पड़ती है। अच्छी बुरी जैसी संगति में रहा करते हैं वैसे बन जाया करते हैं। संसार में हमें पूर्ण सच्चरित्र पुरुषों की संगति प्रायः प्राप्त नहीं होती। धर्म इस सम्बन्ध में भी हमारी सहायता करता है। परम पुरुष परमात्मा की उपासना व भक्ति करके सबसे अधिक सच्चरित्र सत्ता की संगति प्राप्त होती है। उपासना द्वारा प्रभु की संगति में बैठे रहने से हमारे अन्दर चरित्र सम्बन्धी सब सद्गुण आ जाते हैं।

इस प्रकार विचार करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि बिना धर्म के सच्चरित्रता की दीवाल खड़ी नहीं हो सकती। किसी भी दृष्टि से हम देखें, अन्ततः हमें सच्चरित्रता का आधार धर्म को ही मानना पड़ेगा। धर्म की वृद्धि सच्चरित्रता की वृद्धि है। धर्म की हानि सच्चरित्रता की हानि है। सच्चरित्रता की वृद्धि से ही समाज में सुख शान्ति की स्थापना होगी, परस्पर एक दूसरे की उन्नत्यर्थ मनुष्य अग्रसर होंगे। इसलिए हम सभी को चाहिए कि धर्म की वृद्धि के लिए मन–तन–धन से समर्पित होकर सच्चरित्रता नींव के मजबूत पत्थर बनकर अपनी कर्त्तव्य पारायणता का परिचय दें।

– 'पाणिनि महाविद्यालय' रेवली, सोनीपत

ईश्वरीय ज्ञान 'वेद'

– आचार्य डॉ. ओम प्रकाश वर्मा 'विद्यावाचस्पति'

आज संसार के सभी विद्वान निर्विवाद रूप से स्वीकार करते हैं कि वेद मानव जाति का प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। आधुनिक युग के महानतम मनीषी महर्षि दयानन्द सरस्वती को समग्र चिन्तन एवं मानव जाति के सर्वांगीण उत्थान के लिए उनके द्वारा प्रस्तावित बहुआयामी कल्याण योजना की आधारभूमि वेद ही है। उन्होंने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सर्वाधिपति परमेश्वर के आदेश के रूप में मान्यता दी है। उनके विचार से वेदों के अनुकूल आचरण ही लौकिक प्रगति तथा पारलौकिक आनन्द का मुख्य साधन है और वेदाज्ञाओं का उल्लंघन करने से ही कोई मानव समूह पतन के गर्त में गिरकर दारुण दुख भोगता है। उनके प्रवचनों, लेखों और वक्तव्यों के अतिरिक्त उनकी भेंटवार्ताओं में भी इसके प्रमाण उपलब्ध हैं। लाहौर में वेदोपदेश करते हुए एक पादरी के प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था, ''कोई वेद को माने या न माने, परन्तु जो उसके आदेश के अनुसार अपना कार्य करता है, वह उसके उत्तम फल को भोगता है। आप लोगों ने वेद को न मानकर भी वेदमार्ग को अपनाया, जिससे आपका मत सर्वप्रिय हो गया। हमने वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानकर भी न अपनाया, जिसके कारण हमारी दुर्दशा हो गई। ''वेदों के साथ किसी मानव रचनाकार का नाम सम्बद्ध न होने से भी वेद को ईश्वर प्रदत्त निधि के रूप में स्वीकार किया गया है। स्वयं वेद में ही चारों वेदों को ईश्वर की देन कहा गया है; तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दासि जक्षिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत् ।'' ऋग्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद उस यज्ञ रूप परमेश्वर की उत्पत्ति है। अतः मानवीय सृष्टि के साथ ही वेदों का अवतरण होना युक्ति संगत प्रतीत होता है।

वेद का अर्थ है-ज्ञान। पुस्तक के रूप में वेद वह साहित्यिक समग्रता है जिसमें ज्ञान-विज्ञान के समस्त सूत्र संकलित हैं। मनु के अनुसार वेद 'सनातन चक्षु हैं और देव दयानन्द के अनुसार 'वेद सब विद्याओं की पुस्तक है।'' सामान्य अर्थों में वेद वह ग्रन्थ है जिसमें समस्त विद्याओं तथा धार्मिक क्रियाओं का उल्लेख है, जिसमें मानवीय कर्तव्यों और अकर्तव्यों का निर्देश किया गया है, जिसमें सत्य, असत्य एवं ब्रह्म को जानने तथा लौकिक सुख और पारलौकिक आनन्द की प्राप्ति के साधन निहित हैं। वेद चार हैं - ऋग्वेद में ज्ञान-विज्ञान की व्याख्या है, जिसमें तिनके से लेकर परमात्मा पर्यन्त समस्त पदार्थों का तार्किक विश्लेषण किया गया है। इसमें दस मण्डल तथा दस हजार पांच सौ बाइस मंत्र हैं। यजुर्वेद मानवीय कर्मों तथा अनुष्ठानों का ग्रन्थ है, जिसमें चालीस अध्याय तथा एक हजार नौ सौ पिछहत्तर मंत्र हैं। 1873 मंत्रों वाले संगीतात्मक, सामवेद का सम्बन्ध परमेश्वर की उपासना से है और अथर्ववेद के बीस काण्डों के अन्तर्गत 5970 मंत्रों में परम ब्रह्म परमेश्वर और उसकी रचना से सम्बन्धित विभिन्न विषयों, शारीरिक, प्राकृतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पक्षों की विवेचना की गई है। मन्त्र केवल शब्दों का लयात्मक समूहीकरण नहीं है। मन्त्र विशिष्ट परिणाम उत्पन्न करने वाला शब्द समूह है। वेदमंत्रों को वैदिक ऋचाएँ भी कहा जाता है। आदि सृष्टि में मानव जाति की उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर की इच्छा और योजना से मनुष्यों के कल्याण के लिए चारों वेदों का प्रकाश चार पुण्यात्मा ऋषियों की आत्मा में हुआ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की ज्ञानराशि को हृदयंगम करने वाले इन ऋषियों के नाम क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा है। इनके माध्यम से गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार वेद में निहित ज्ञान अन्य मनुष्यों तक पहुँचा। इस नैसर्गिक ज्ञान का हस्तान्तरण मौखिक प्रवचन और श्रवण से ही होता रहा। अतः वेद को श्रुति भी कहा जाता है।

वेद आदिकाव्य है। अधिक उपयुक्त शब्दों में अनादि काव्य है, क्योंकि उसका अन्त नहीं होता। वेद का कोई मरणशील निर्माता नहीं। उसका दाता है जो स्वयं अनादि और अनन्त है, चैतन्य का स्रोत है, ज्ञान का उद्गम है। ज्ञान विज्ञान का प्रत्येक क्षेत्र, शोध की प्रत्येक प्राकल्पना और अनुसन्धानकर्ताओं का प्रत्येक सत्यापित निष्कर्ष भी साहित्य की प्रत्येक विधा, मानव मस्तिष्क की प्रत्येक उपलब्धि का पूर्वांकन किसी न किसी वैदिक ऋचा के गर्भ में स्थित है। मैक्समूलर ने लिखा है, ''वेदों को हम इसलिए आदि सृष्टि से कह सकते हैं कि उससे पूर्व ज्ञान का अन्य कोई निश्चित चिन्ह नहीं मिलता।'' वेद की प्रामाणिकता के विषय में वह लिखता है, ''वेदों का प्रत्येक मन्त्र, नहीं नहीं, प्रत्येक शब्द प्रमाणिक लेख है'' वेद कालबाधित नहीं, सार्वकालिक है जो समस्त प्राकृतिक और मानवीय समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। मानव सृष्टि को प्रारम्भ से आज तक संचित ज्ञान के बहुआयामी भंडार का ही नहीं, अपितु भविष्य में सम्भावित वैज्ञानिक उपलब्धियों का उद्गम भी वेद हैं। वैदिक ऋचाओं के लघु सूत्रों में ज्ञान-विज्ञान के विशाल आधुनिक महावृक्ष की असंख्यात शाखाओं, उपशाखाओं के मूल तन्तु निहित हैं। निष्पक्ष भाव से जिज्ञासा वृत्ति के साथ वेदों का पर्यावलोकन करने से सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि समस्त वैज्ञानिक सिद्धान्त और मानवीय ज्ञान बीज रूप में वेदमंत्रों में विद्यमान हैं। अध्येताओं और शोधकर्ताओं का पुरुषार्थ तथा नवीनता केवल वैदिक सूत्रों के बोध व्याख्या और विश्लेषण तक सीमित है। प्रसिद्ध संत एडवर्ड रिपोर्टर के शब्दों में, ''हम किसी नवीन दर्शन की आशा या आकांक्षा कठिनता से ही कर सकते हैं, क्योंकि सम्पूर्ण ऐतिहासिक विकास में वेदों के विचार ही बीज रूप में चले आ रहे हैं।' वेद-बिन्दुओं की व्याख्या और विश्लेषण से ही मानवीय ज्ञान के अक्षय कोष का विस्तार हुआ है। दयासागर परमेश्वर ने ऋषियों के हृदय में वेदों का प्रकाश इसलिए किया ताकि मनुष्य जाति अपने भौतिक और सामाजिक जीवन को सुखी, समृद्ध, सात्विक, संतुष्ट, सार्थक तथा व्यवस्थित बना सके और संसार को छोड़ने के पश्चात् मोक्ष प्राप्त कर सके।

भारतीय धर्म और संस्कृति का विशाल भवन वेदों की नींव पर खड़ा है। आचार्य मनु के विचार से नास्तिक वह नहीं है जो ईश्वर को नहीं मानता, बल्कि नास्तिक वह है जो वेद को नहीं मानता, ''नास्तिको वेदनिन्दकः'' 'उसके अनुसार लौकिक वस्तुओं को देखने के लिए जिस प्रकार नेत्रों की आवश्यकता है उसी प्रकार अलौकिक रहस्यों को जानने के लिए वेदों की आवश्यकता है। उसके शब्दों में, ''वेदशास्त्रार्थ तत्वज्ञों यत्र कुत्राश्रमो वसन्। इहैव लोके तिष्ठन स ब्रह्मभूयायकल्पते'', वेदार्थ जानने वाला किसी भी आश्रम में इसी लोक में ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार धन से परिपूर्ण पृथ्वी का दान करने से जो पुण्य लाभ होता है, वही लाभ वेद का अध्ययन करने से होता है। ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् वेद के ही व्याख्यान हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष शास्त्रों के स्रोत भी वेद हैं। भारत के विभिन्न सम्प्रदायों के मूल में वेद का ही कोई उपदेश निहित है। यथार्थ ज्ञान के अभाव तथा निहित स्वार्थ के कारण कहीं-कहीं वेदविरूद्ध बातों का समावेश कर दिया गया है। यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि ईसाइयत और इस्लाम में प्रचलित सर्वहितकारी सर्वमान्य विचार भी वेदों की ही देन है। वेद भाषा विज्ञान का भी आधार है। पहले अधिकांश विद्वान लैटिन, हिब्रू और ग्रीक भाषाओं को ही मूल मानव भाषा मानते थे, किन्तु अब सभी संस्कृत को सब भाषाओं का मूल स्रोत मानते हैं।

हजारों वर्षों से पृथ्वी को चपटी कहने वाले लोग अब इसे गोल मानने लगे हैं। वैज्ञानिक खोज ने सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, जबकि अभी तक पश्चिमी और मुस्लिम विद्वान् यही मानते थे कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य घूमता है। ऋग्वेद की प्रारम्भिक ऋचाओं में ही इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख है कि पृथ्वी गोल है और पृथ्वी समेत समस्त ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं। अन्तरिक्ष में सूर्य से भी अधिक विशाल तारों (अगस्त्य, ज्येष्ठा आदि) का गुरुत्वाकर्षण के नियम का, अग्नि-जल के संयोग से तथा विद्युत शक्ति से चलने वाले वेगवान् वाहनों का वर्णन भी वेदों में उपलब्ध है। वैदिक गणित का महत्त्व तो आज शिक्षा जगत ने पहचान ही लिया है। पारिवारिक जीवन, आर्थिक व्यावसायिक व्यवस्था, शासन-प्रशासन तन्त्र, कला और शिल्प, व्यापार और वाणित्य, शिक्षा और प्रशिक्षण मानवीय सम्बन्ध, राजा और प्रजा, लोकतान्त्रिक समाज व्यवस्था, कृषि, पर्यावरण इत्यादि समस्त विषयों पर वेदमंत्र मानव जाति का मार्गदर्शन करते हैं।

ज्ञान सीखने की प्रक्रिया का परिणाम है। जीवन के अनुभव मात्र से ज्ञान में वृद्धि करके ग्रन्थों का निर्माण नहीं होता। पढ़ने या सुनने से ज्ञान की प्राप्ति होती है। ''वैज्ञानिक सिद्धान्तों का निर्माण भी पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है। यदि स्वभाव से ही मनुष्यों को क्रमिक ज्ञान प्राप्त होता तो गिरि कन्दराओं, सघन जंगलों तथा दुर्गम क्षेत्रों में सहस्रों वर्षों से रहने वाले तथाकथित आदिवासी अभी तक भी अज्ञानता और दरिद्रता की अवस्था में न रहते। ज्ञानियों तथा ज्ञानदाताओं के सम्पर्क तथा शिक्षा के अभाव के कारण ही उनकी यह दुर्दशा है। अमरीका के अज्ञानी लोग यूरोपवासियों के सम्पर्क और शिक्षा के कारण ही आज ज्ञान-विज्ञान के ठेकेदार बन गये हैं। यूरोप को यूनानियों से और यूनानियों को आर्यावर्त अर्थात् भारत के वेदवेत्ताओं से ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान से अजस्र प्रवाह वेद की अमृत बूंदों का स्रोत स्वयं अनन्त परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कौन हो सकता है। संसार के सभी मनुष्यकृत ग्रन्थ विशिष्ट समाजों या समूहों की सम्पत्ति बन कर रह गये, क्योंकि वे देश, काल और परिस्थिति की सीमाओं में आबद्ध हैं। उनमें से एक भी वैदिक वागमय के सदृश सम्पूर्ण मानव समाज के लिए सर्वहितकारी और सर्वमान्य उपदेश प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं हो सका।

एकमात्र वेद ही ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें उपदेश किसी एक देश अथवा समूह के लिए नहीं, अपितु संसार के प्रत्येक स्थान पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से आत्मोन्नति, सामाजिक उत्थान, शान्ति, सद्भाव, सदाचार, लौकिक सुख तथा पारलौकिक आनन्द का मार्ग प्रशस्त करते हैं। राग, द्वेष, अहंकार, स्वार्थ, संघर्ष, शोषण तथा विभिन्न प्रकार के वादों-प्रतिवादों और समस्याओं से त्रस्त, विध्वंस के कगार पर खड़ी मानवता की रक्षा के लिए वैदिक शिक्षा तथा वेदानुकूल आचरण ही एकमात्र उपाय है। स्वयं जर्मन विद्वान् मैक्समूलर लिखता है, ''मेरा यह दावा है कि संसार में मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए कोई पुस्तक इतनी आवश्यक नहीं जितना वेद है।'' वास्तव में यही एक ऐसा ज्ञान है जिसमें सृष्टिक्रम के अनुकूल, प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध, पवित्रात्मा आप्त पुरुषों के द्वारा मान्य तथा तर्कसिद्ध बुद्धिगम्य तथ्यों पर आधारित, मानव मात्र के लिए हितकारी कथन समाविष्ट हैं।

मानव जीवन की ही नहीं, जड़-चेतन सम्पूर्ण जगत् के विविध पक्षों की सूत्रबद्ध विवेचना करने वाले इतने बृहत् और विस्तृत ज्ञान-कोष का अनावरण किसी एक या दस-बीस विद्वानों के वश की बात नहीं। इस कार्य का सम्पादन सर्वशक्तिसम्पन्न और सर्वज्ञ विधाता के द्वारा ही सम्भव है। यजुर्वेद में परमात्मा की वाणी का संकेत है, ''यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याम् शुद्राय चार्याय च स्वाया चारणाय च।'', अर्थात् जिस प्रकार मैं (ईश्वर) इस कल्याण करने वाली वेदवाणी का उपदेश ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र और वैश्य वर्णों के लिए तथा अपने उपासकों और अन्य सबके लिए करता हूँ, वैसे तुम सब भी करो। ईश्वरीय वाणी होने से ही वेदों को अपौरुषेय कहा गया है। इसका यह अर्थ नहीं कि परमेश्वर ने साकार होकर चार ऋषियों के हाथों में ये पुस्तकें थमा दीं, अथवा क्रमिक अन्तराल से वह इनके पन्ने या नियम पट्टिका उनके समीप फेंकता गया। ईश्वरीय वाणी को अन्तरीकृत करने वाले ऋषिगण मंत्रों के स्रष्टा या निर्माता नहीं थे। वे मन्त्रद्रष्टा थे। वेद तो वह दिव्य वाणी है जो परमेश्वर की न्याय योजना से असीम से निकल कर अन्तरिक्ष में कम्पन करती हुई, शब्द तरंगों के रूप में उन मनुष्यों के अन्तःकरण में प्रविष्ट हो गई, जिन्होंने स्वयं को पूर्वसंचित श्रेष्ठतम कर्मों के आधार पर पहले से ही इस अलौकिक ज्ञान का पात्र बना रखा था। ये पुण्यात्मा ऋषि ईश्वरीय शिक्षा को हृदयंगम करने वाले दिव्य द्रष्टा थे, जिनके मानस निर्झर को अजस्र प्रवाह मानव मस्तिष्क के प्रत्येक अंचल को सींचता हुआ, तब तक आगे बढ़ता रहेगा, जब तक इसके मूल स्रोत की इच्छा से सृष्टि का मूर्त स्वरूप ही तिरोहित न हो जाये, जिसके साथ ही यह ज्ञान अपने स्रोत के गर्भ में विलीन हो जायेगा। शब्द तरंगे पुनः अन्तरिक्ष में संकुचित होकर अश्रुत हो जायेंगी, किन्तु लुप्त नहीं होंगी, क्योंकि पुनः सृष्टि की उत्पत्ति के साथ इस दिव्य शब्द समूह को, इस कल्याणी वाणी को सर्वज्ञ सरस्वती की इच्छा से मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की पुण्यात्माओं में प्रकाशित होना है।

- 3/ पंत विहार - दिल्ली रोड, सहारनपुर-247001

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में नव–निर्मित छात्रावास का उद्घाटन समारोह एवं 36वाँ सामवेद पारायण यज्ञ भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

शिक्षित एवं संस्कारित नारी ही राष्ट्र की आधार होती हैं

– स्वामी आर्यवेश

बालक एवं बालिकाओं का गुरुकुल शिक्षा के द्वारा सर्वांगीण विकास सम्भव है – स्वामी प्रणवानन्द

वेद पारायण यज्ञ का संकल्प अवश्य पूरा होगा – डॉ. सोमदेव शास्त्री

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़, राजस्थान में दिनांक 13 से 15 जुलाई, 2022 को 36वाँ सामवेद पारायण यज्ञ एवं नव–निर्मित छात्रावास का उद्घाटन समारोह भव्यता के साथ आयोजित किया गया। इस ऐतिहासिक गुरुकुल का जीर्णोद्धार कर पुनः प्रारम्भ करने का दायित्व आर्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने अपने कंधों पर लिया है। विदित हो कि गत् दो वर्ष पूर्व जब कोरोना का संक्रमण पूरे विश्व में फैला हुआ था उसी अन्तराल में आचार्य सोमदेव शास्त्री जी का प्रवास कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में हुआ और उन्होंने इस गुरुकुल के जीर्णोद्धार एवं पुनः प्रारम्भ करने का संकल्प ले लिया। ईश्वर की महती कृपा से और आर्यजनों के सहयोग से आचार्य जी का वह संकल्प न केवल पूरा हुआ बल्कि अब गुरुकुल दिन–दोगुनी, रात–चौगुनी उन्नति कर रहा है। पिछले एक वर्ष में लगभग एक करोड़ रुपया गुरुकुल में भव्य यज्ञशाला, महर्षि दयानन्द छात्रावास एवं अन्य व्यवस्थाओं पर व्यय हो चुका है जो दान–दाताओं के द्वारा ही प्रदान किया गया है। गुरुकुल में यज्ञशाला का निर्माण डॉलर फाऊण्डेशन के अध्यक्ष दानवीर सेठ दीनदयाल आर्य ने अपने पवित्र दान से करवाया और छात्रावास का निर्माण विभिन्न दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से सम्पन्न हुआ।

आचार्य सोमदेव शास्त्री जी का यह भी एक पवित्र संकल्प है कि वे 100 पारायण यज्ञ करके यज्ञों की परम्परा को समाज में प्रतिष्ठित करेंगे। उन्होंने अपने पैतृक ग्राम–नैनोरा, जिला–मन्दसौर में वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ किया और यज्ञों की उस श्रृंखला में इस वर्ष 36वाँ सामवेद पारायण यज्ञ कन्या गुरुकुल चित्तड़गढ़ की यज्ञशाला में आयोजित किया गया। ज्ञातव्य है कि आचार्य जी यज्ञ में होने वाले सम्पूर्ण व्यय को स्वयं वहन करते हैं और किसी से उसके लिए दान नहीं लेते। उन्होंने सार्वजनिक रूप से वर्षों पहले यह संकल्प लिया था कि वे वेद प्रचार एवं यज्ञों के माध्यम से उन्हें प्राप्त होने वाली दक्षिणा की राशि को अपने परिवार के पोषण में नहीं लगायेंगे बल्कि उसी से यज्ञों और वेद प्रचार एवं साहित्य प्रचार में करेंगे और इस संकल्प को निरन्तर पूरा करते हुए इस बार 36वाँ सामवेद पारायण यज्ञ गुरुकुल की पवित्र भूमि पर आयोजित किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा पद पर आर्य जगत् के युवा विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक गुरुकुल होशंगाबाद को नियुक्त किया गया और उन्होंने बड़ी विद्वता एवं पांडित्यपूर्ण तरीके से यज्ञ को पूरा कराया।

13 जुलाई, 2022 को प्रारम्भ हुए सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति 15 जुलाई, 2022 को प्रातः 10 बजे की गई। यज्ञ के मुख्य यजमान स्वयं आचार्य सोमदेव शास्त्री उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री तथा उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री प्रणव शास्त्री रहे, उनके अतिरिक्त अन्य महानुभाव भी यजमान के रूप में यज्ञवेदी पर सपत्नीक एवं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहकर आहुतियाँ प्रदान की। सामवेद पारायण यज्ञ के अतिरिक्त इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में नव–निर्मित छात्रावास का उद्घाटन समारोह एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम भी सोल्लास आयोजित किया गया।

नव–निर्मित छात्रावास का उद्घाटन अमेरिका से विशेष रूप से पधारे और छात्रावास के लिए अपने प्रयास से 10 लाख रुपये का सहयोग प्रदान करने वाले श्री प्रमोद राघव जी ने किया। इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री जीववर्द्धन शास्त्री, श्री बिरजानन्द जी, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी, डॉ. धनंजय शास्त्री, डॉ. रविन्द्र कुमार (हरिद्वार) आदि विद्वान् भी उपस्थित थे। आचार्य सोमदेव जी ने वेद मंत्रों का उच्चारण कर उद्घाटन की कार्यवाही को सम्पन्न करवाया। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार शेखावत जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। छात्रावास के सभी कक्ष सुसज्जित एवं विविध सुविधाओं से ओत–प्रोत देखकर सभी उपस्थित जन अत्यन्त प्रभावित हुए। उद्घाटन समारोह के उपरान्त वाटरप्रूफ विशाल पण्डाल में वेद प्रचार का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री भीष्म कुमार के भजन तथा विद्वानों के व्याख्यान कराये गये। इन तीनों दिनों में स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी, स्वामी आदित्यवेश जी व अन्य विद्वानों के व्याख्यान होते रहे। 14 जुलाई को सायंकाल स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज कार्यक्रम में सम्मिलित हो गये और उनका भी आशीर्वाद इस अवसर पर सभी को प्राप्त हुआ।

अन्तिम दिन समापन समारोह का भव्य आयोजन किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी, श्री गुणवंत सिंह कोठारी, श्री सुरेन्द्र सिंह व श्री संदीप शर्मा जिला परिषद् चेयरमैन के अतिरिक्त राजस्थान सरकार के मंत्री श्री उदयलाल आंजना मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। इस अवसर पर श्री उदयलाल आंजना ने कन्या गुरुकुल के लिए 11 लाख रुपये की राशि अनुदान रूप में देने की घोषणा की और भविष्य में भी सहयोग करते रहने का आश्वासन दिया।

अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि यह कन्या गुरुकुल श्रद्धेय आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के तप एवं पुरुषार्थ के कारण पुनर्जीवित हुआ है अब हम सबकी जिम्मेदारी है कि इसे आगे बढ़ाने के लिए तन–मन–धन से सहयोग करें। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी उपस्थित आर्यजनों से अपील की कि वे अपने घरों में कन्या गुरुकुल के लिए एक दान पात्र शेष पृष्ठ 5 पर

पृष्ठ 4 का शेष

कन्याएँ देहरी का दीपक होती हैं – स्वामी आदित्यवेश

ईश्वर की उपासना के बिना मनुष्य जीवन अधूरा है – योगेन्द्र याज्ञिक

महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा आवश्यक है – आचार्य धनंजय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी नव–जागरण के पुरोधा थे –उदयलाल आंजना

रखें और वर्ष भर में इक्कट्ठी हुई दानराशि को यहां आचार्य सोमदेव जी को देवें तो यह गुरुकुल निर्बाद गति से संचालित हो सकेगा। गुरुकुल में पढ़ने वाली कन्याएँ अधिकतर आदिवासी परिवारों से आई हैं। इन कन्याओं के माता–पिता अनपढ़ तथा गरीब हैं। अतः इन्हें पढ़ा–लिखाकर विदुषी बनाना और अपने पैरों पर खड़ा करना एक महान सेवा का कार्य है। अतः जो लोग यह चाहते हैं कि इन गरीब परिवारों की कन्याएं पढ़–लिखकर विदुषी बनें, वेद मंत्र बोलें और यज्ञ करें–करायें, बड़े–बड़े पदों पर प्रतिष्ठित होकर देश सेवा के कार्यो में अपना योगदान दे सकें तो ऐसे लोगों को कन्या गुरुकुल को दिल खोलकर दान देना चाहिए। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने कहा कि आज शिक्षा प्रणाली में संस्कारों का समावेश नहीं है और देश के करोड़ों बालक–बालिकाएँ जो विद्यालय में पढ़ते हैं उन्हें संस्कार न मिलने के कारण उनका जीवन दिग्भ्रमित हो जाता है। परिणामस्वरूप देश के बड़े–बड़े पदों पर नियुक्त होने वाले लोग संस्कार न होने के कारण बड़े–बड़े घोटाले एवं भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाते हैं। देश को अनैतिकता, अनाचार, भ्रष्टाचार आदि बुराईयों से यदि बचाना है तो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मजबूत करना होगा। यह समय की माँग है।

स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि हमारे सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय के ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। अतः आर्ष शिक्षा के माध्यम से बालक–बालिकाओं को संस्कृत का गहन ज्ञान दिया जाना चाहिए ताकि वे विद्वान् तथा विदुषी बनकर वेद एवं समस्त वैदिक वाङ्मय का अध्ययन कर सामान्य जनता को ज्ञान लाभ करा सकें। स्वामी प्रणवानन्द जी ने आचार्य सोमदेव शास्त्री जी को साधुवाद देते हुए कहा कि शास्त्री जी की तपस्या अब रंग ला रही है और इतने थोड़े समय में यह गुरुकुल इतनी प्रगति कर रहा है यह विशेष प्रशस्ति की बात है।

स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि कन्याओं की शिक्षा समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कन्याएँ देहरी का दीपक होती हैं, अर्थात् जैसे घर की देहरी के ऊपर रखा हुआ दीपक घर के अन्दर भी प्रकाश देता है और बाहर भी देता है। ठीक उसी प्रकार एक सुसंस्कारित कन्या अपने पिता के कुल को भी ज्ञान से प्रकाशित करती है और विवाह के उपरान्त अपने ससुराल के परिवार को ज्ञान से लाभान्वित करती है। उन्होंने कहा कि कन्याओं की शिक्षा के लिए आर्य समाज ने प्रारम्भ से ही महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। आज जरूरत है ऐसे गुरुकुल एवं विद्यालय खोलने की जिनमें कन्याओं को न केवल शिक्षा बल्कि संस्कार भी दिये जा सकें।

आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी ने सामवेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा के नाते सभी यज्ञप्रेमी महानुभावों को प्रेरणा दी कि वे जीवन में ईश्वर उपासना को अपनाएं। ईश्वर उपासना के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। सामवेद उपासना का वेद है। अतः इस वेद से किये गये यज्ञ की पूर्णाहुति पर सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि वे ईश्वर की उपासना को अपने जीवन में क्रियान्वित करेंगे।

गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय जी ने आर्ष शिक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि जब तक आर्ष शिक्षा को नहीं अपनाया जायेगा तब तक भारत का प्राचीन गौरव नहीं लौट सकता। अतः यह आवश्यक है कि हमें अपने गुरुकुलों में आर्ष पाठ विधि को ही लागू करना चाहिए।

मुख्य अतिथि श्री उदयलाल आंजना ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का गुणगान करते हुए कहा कि महर्षि की कृपा से ही हमारा देश आजाद हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने समस्त सामाजिक कुरीतियों, रुढ़ियों, अन्धविश्वास तथा पाखण्ड के विरुद्ध शंखनाद किया और पूरे समाज को वैदिक सिद्धान्तों को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि आज महर्षि जी की शिक्षाओं को अपनाने की सबसे अधिक जरूरत है। देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, धार्मिक अन्धविश्वास तथा पाखण्ड निरन्तर बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में महर्षि दयानन्द जी के विचार ही प्रासंगिक हैं। अतः दयानन्द सरस्वती जी के विचारधारा को अधिक से अधिक प्रचारित–प्रसारित करने के लिए गुरुकुलों को मजबूत बनाना आवश्यक है। उन्होंने कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के पुनः प्रारम्भ और जीर्णोद्धार के लिए आचार्य सोमदेव शास्त्री जी को हृदय से धन्यवाद दिया और उन्हें हर प्रकार से सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम के सूत्रधार प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने अपने धन्यवाद उद्बोधन में कहा कि मैंने जो संकल्प किया था, ईश्वर की महान कृपा से वह पूरा हो गया है। अब मेरी इच्छा है कि इस गुरुकुल को निरन्तर चलाये रखने के लिए कुछ मजबूत सहयोगी आगे आयें वे समय भी दें और साधन भी जुटायें तभी जाकर मेरे इस संकल्प का सामान्य जनता को भी लाभ हो सकेगा। आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने अपने सभी सहयोगियों का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने जहाँ आज के मुख्यअतिथि राजस्थान सरकार के मंत्री श्री उदयलाल आंजना जी का धन्यवाद ज्ञापित किया वहीं स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी, डॉ. धनंजय जी, श्री भीष्म कुमार आर्य भजनोपदेशक, राजस्थान सभा के मंत्री श्री जीववर्द्धन शास्त्री, श्री विक्रम आंजना निम्बाहेड़ा, श्री देवेन्द्र जी शेखावत, श्री कुंजीलाल जी पाटीदार, गुरुकुल की दोनों आचार्याओं का भी आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त सभी विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं को भी आचार्य सोमदेव शास्त्री जी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री जी एवं उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री प्रणव शास्त्री जी ने दक्षिणा एवं माल्यार्पण द्वारा सम्मानित किया। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह, उल्लास एवं सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

श्रद्धा – ईर्ष्या – द्वेष

– प्रो० रमेश चन्द्र शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता ''आर्यरत्न''

श्रद्धा दो प्रकार की होती है, अन्ध श्रद्धा और सत्य श्रद्धा। जहाँ आधार–भूत सत्य का अभाव होता है तथा किसी महती कृपा मिलने की आशा में, हम जब किसी व्यक्ति विशेष में पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हैं तो वह अन्ध श्रद्धा कहाती है। यह आवश्यक नहीं कि वह व्यक्ति विद्वान् व सदाचारी भी हो, पर उस व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके अनुयायियों द्वारा होनी चाहिये, चाहे उसके अनुयायी मूर्ख ही क्यों न हैं। अन्ध श्रद्धा शीघ्र स्थापित होने वाली विचारधारा का नाम है और जब सत्य का ज्ञान होता है तब यह समाप्त हो जाती है। इसको योगदर्शन में मिथ्या ज्ञान कहा है **''मिथ्याज्ञानमतद्रुप प्रतिष्ठितम्''।**

स्वाध्याय तथा सत्संग से जब यह मिथ्या ज्ञान समाप्त हो जाता है तब श्रद्धा का आविर्भाव होता है या स्वाध्याय, सत्संग द्वारा आप्त पुरुषों की तथा परमात्मा की कृपा होती है तब उपासक के अन्दर, भक्त के हृदय में प्रथम बार में ही श्रद्धा का अवतरण होता है और वह मुंशीराम से महात्मा मुंशीराम तथा महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन कर विश्व कल्याण के लिये अपने जीवन को अर्पित कर देता है।

लेकिन कुछ व्यक्तियों के हृदय राग द्वेष ईर्ष्या आदि अवगुणों से इतने कलुषित होते हैं कि उन व्यक्तियों को श्रद्धानन्द जैसे महान् तपस्वी, त्यागी, स्वतन्त्रता आन्दोलन को अपने यौवन पर पहुँचाने वाले, गुरुकुलों की परम्परा को पल्लवित करने वाले पसन्द नहीं आते। इसीलिये उस समय हिन्दू और मुसलमान आदि में जो दुष्ट व्यक्ति थे उन्होंने ईर्ष्यावश स्वामी श्रद्धानन्द का प्रबलतम विरोध किया और उसका परिणाम श्रद्धानन्द बलिदान के रूप में संसार के सामने आया और हमारा एक महापुरुष हम से सदा के लिये अलग हो गया।

द्वेष का सूक्ष्म रूप ईर्ष्या है। ईर्ष्या मन में रहती है। जब यह ईर्ष्या उग्ररुप में होती है तब इसी को द्वेष कहते हैं और ईर्ष्या द्वेष की कालिमा से कलुषित व्यक्ति ही दुष्ट कहाता है। इन दुष्टों को **ऋग्वेद १-६६-५** में महर्षि दयानन्द ने शत्रु माना हैं **''दुष्टान शत्रुजनान्''। ''दुष्टः हिंसायाम्''** इसीलिये जितने भी हिंसक प्रवृत्ति के मनुष्य हैं वे सब दुष्ट माने जाते हैं। यह हिंसा मानसिक, वाचिक तथा शारीरिक किसी भी प्रकार की हो सकती है। प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे दुष्टों का प्रचलन हो चुका है। मलिन हृदय वाले भी दुष्ट होते हैं **दुस् (दिवादि०, परस्मै०)** दुष्यति प्रेरणा अर्थ में यही दूषयति बनता है। ये ही लोग दूसरों को भी मलिन करते हैं, भ्रष्ट करते हैं, बिगाड़ते हैं। घृणा भाव इन दुष्टों में कूट–कूट कर भरा होता है। **दुष् वैकृत्ये (दिवादि०, परस्मै० अ०)** से भी इस शब्द की निषपत्ति मानी जाती है। यह वर्ग समाज में अनेक प्रकार की विकृति फैलाता है। इन्हीं विकारों के फैलते–फैलते एक दिन मानव समाज ही नष्ट हो जाता है और ऐसे मनुष्य **''मनुष्यरुपेण मृगाश्चरन्ति''** पशु तथा पशुओं से भी ज्यादा समाज के लिये हानिकारक होते हैं। इसीलिये अथर्ववेद ८–४–२२ में ''उलूकयातुं शुशुलूक यातुं जहिश्व यातुं उत्कोकयातुम्। सुपर्ण यातुं उत् गृध यातुं दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र।। मन्त्र के द्वारा परमात्मा से तथा राजा से प्रार्थना की गई कि इन पशु प्रवृत्ति वाले दुष्टों से हमारी रक्षा करो और इनको नष्ट कर दो।

इन दुष्ट, राग द्वेष ईर्ष्या सम्पन्न व्यक्तियों को उल्लू की तरह दिन में भी दिखाई नहीं देता। साधु सन्त महात्माओं का ज्ञान रूपी प्रकाश इनकी आँखों को अच्छा नही लगता और ये अन्धेरे में साधु सन्तों पर बार हमला करते हैं। अर्थात् पीछे से हमला करते हैं। बात का बतंगड़ बना कर उनको बदनाम करते हैं। इन दुष्टों की प्रवृत्ति भेड़िये जैसी बन जाती है, इन का पेट भी वृकोदर (भेड़िये) के सामान ज्यादा खाने वाला हो जाता है, इनका परिश्रम की कमाई से पेट नहीं भरता अपितु तरह–तरह के आयोजन, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन आदि के नाम पर करोड़ों डकार जाते हैं। बार–बार पदासीन होने पर भी इनकी भूख शान्त नहीं होती।

इन दुष्टों का स्वभाव कुत्तों जैसा होता है। जैसे कुत्ते स्वभावतः अपनी जाति से द्वेष करते हैं, एक ग्रुप के कुत्तों को दूसरे ग्रुप के कुत्ते अच्छे नहीं लगते और वे उनको देखकर भौंकना प्रारम्भ कर देते हैं, आपस में छीना–झपटी करते हैं। इन श्व–स्वभाव वाले मनुष्यों की भी यही दशा होती है। इस प्रवृत्ति के पीछे एक बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक तथ्य है और वह यह है। दर्शकों न कई बार यह देखा होगा कि कुत्ता सोते–सोते कई बार भोंकना शुरू कर देता है तब उस एक कुत्ते की भौंकने की आवाज सुनकर उसके (उस ग्रुप के) साथी भी भौंकना शुरू कर देते है। और थोड़ी देर बाद भौंक–भौंक कर चुप हो जाते हैं। मनोविज्ञान यह है कि उस कुत्ते ने कभी कोई शेर अपने मालिक के पर्यटन के समय देखा था। अब मालिक ने किसी कारण से उस कुत्ते को छोड़ दिया, घर से निकाल दिया। तो ऐसे कुत्ते को जब कभी सोते समय स्वप्न में वह शेर दिखाई देगा तो वह स्वप्न को वास्तविक सत्य मानकर और स्वप्निल शेर को वास्तव में शेर मानकर भौंकना शुरू कर देगा। उसकी देखा–देखी अन्य कुत्ते भी भौंकना शुरू कर देते हैं। ऐसे ही किसी साधु सन्त के कार्य–प्रभाव से अपने स्वार्थो को खतरे में पड़ा जानकर यह दुष्ट कुत्ता जब भौंकता है तब इस ग्रुप के अन्य कुत्ते भी भौंकना शुरू कर देते है और सारे मुहल्ले की नींद खराब कर देते है, उसके अनुयायी अन्य कुत्तों को यह पता नहीं कि हमारा लीडर कुत्ता क्यों भौंक रहा है बस उनका काम तो अपने लीडर कुत्ते को भौंकता देखकर स्वयम् को भी भौंकने की ज्वाला में तप्त करना मात्र है।

आजकल ऐसे श्व–स्वभाव युक्त मनुष्यों की कमी नहीं है। जब एक कुत्ते ने यह कहा कि फलां आदमी साधुसन्त ने यह कहा वह कहा तो दूसरे कुत्ते उस साधु सन्त के कहे को बिना देखे बिना पड़े सोचे विचारे भौंकना शुरू कर देंगे। (कोक) चिड़ा की तरह ये कामी भी बहुत होते हैं, इनकी कामनाएँ अपार होती हैं। गरुड़ की तरह ये अभिमानी ही नहीं दुरभिमानी भी होते हैं। इन मूर्ख दुष्टों को यह दुरभिमान होता है कि इस पद के लायक तो मैं था यह दूसरा साधुसन्त कहाँ से आ गया। इसीलिये इतना भौंको कि दूसरे यह समझें कि यह हमारे विचारों का नहीं है, इसके विचार दूसरे प्रकार के हैं। ये विधर्मी है धार्मिक तो केवल हम हैं। और अन्त में जब तक यह ईर्ष्या द्वेष की भावना हमारे अन्दर विद्यमान रहेगी हम एक श्रद्धानन्द नहीं अनेक श्रद्धानन्दों को बाहर करने का प्रयत्न करते रहेंगे। वेद के इस मन्त्र के आधार पर हम जीवन के अन्दर तक गहराई तक समझें और अपने स्वभाव, अपने संस्कारों को शुद्ध पवित्र बनायें वरना परमात्मा हमें पुनर्जन्म कुत्ते आदि जातियों में कर्मफलानुसार अवश्य भेजेगा।

–१८१६ सैक्टर-२८, फरीदाबाद, हरियाणा

व्रत तथा व्रत पालन

– दानसिंह प्रजापति

वेदों का पठन–पाठन, दान–पुण्य साधन चतुष्टय (विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति, मुमुक्षत्व) अनन्य भक्ति आदि प्रभु के कृपा पात्र बनने के साधन हैं। इन साधनों की भाँति व्रत भी एक महत्वपूर्ण साधन है। वेद विहित कर्त्तव्य कर्म करने का दृढ़ निश्चय व्रत कहलाता है। सत्य निष्ठा तथा शुभ क्रियाओं से कार्य सम्पादन को ही व्रत पालन कहते हैं। संसार के प्रत्येक श्रेष्ठ मानव का जीवन व्रती जीवन होता है। अद्य पर्यन्त जितने भी महामानव यथा–राजा हरिश्चन्द्र, श्रीराम, महात्मा कृष्ण के बारे में कहा जाता है कि–

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।

पै दृढ़ व्रत हरिश्चन्द्र कौ टरै न सत्य विचार।।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम तो व्रत के पर्याय रहे हैं। अनेक बार उन्होंने अपने व्रतों को उद्घोषित किया और उन्हें कर दिखाया। यथा–हरिहऊँ सकला भूमि गरू आई।

रघुवंशिन्ह कर सहज सुभाऊ।

जनु कुपंथ पग धरहि न काहू।।

निश्चर हीन करहुँ महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह।

सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाहि जाहि सुख दीन्ह।।

सखा नीति तुम नीक विचारी। मम प्रण शरणागत भय हारी। आदि आदि।

वेदों में व्रत की महिमा का विस्तृत वर्णन अनेक मंत्रों में विद्यमान है। वेद मानव को व्रती बनने की आज्ञा देते हैं। यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के मंत्र ५ में व्रत का इस प्रकार वर्णन है– अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। अर्थात्– हे (व्रत पते) सब सत्य स्वरुप कर्मो के पालन करने हारे और (अग्ने सत्य एवं सृष्टि क्रम आदि का उपदेश करने हारे परमेश्वर ((अनृतात्) झूँठ से विपरीत (सत्यम्) वेद ज्ञान, श्रेष्ठ विचार व विद्वानों का संग आदि (व्रत) सत्य मानना, सत्कर्म करना, सत्य बोलना आदि की दृढ़ता से (उपैमि) अनुष्ठान करने सम्बन्धी नियमों के पालन की इच्छा करता हूँ। आप (मैं) मेरे (तत्) उस सत्य व्रत को (राध्यताम्) अच्छी प्रकार सिद्ध कीजिये, जिससे कि (अहं) मैं उस सत्य व्रत के पालन करने में (संकेयं) समर्थ होऊँ। मैं (इदम्) इस सत्य व्रत को ठीक प्रकार से (चरिष्यामि) अपने जीवन में पालन करूंगा।

इस वेद मंत्र में कहा है कि जैसे सत्य व्रतों के पालन से परमेश्वर व्रतपति है, वैसे हम लोग भी उस प्रभु की कृपा से और अपने पुरुषार्थ से सत्यव्रतों के पालन करने वाले हों। अतः स्पष्ट है कि व्रतों का ठीक–ठीक परिपालन प्रभु की साझेदारी के बिना कठिन ही नहीं वरन् असंभव है।

बहुधा लोग किसी पौराणिक या कल्पित देवी–देवता की प्रसन्नता के हितार्थ अमुकवार या अमुक तिथि को अन्न के परित्याग को 'व्रत, मानते हैं, और उन्हें धारण करते हैं। अनेक व्यक्ति ऐसे भी हैं जो खड़े रहकर या एक हाथ ऊपर को रख कर वर्ष–१० वर्ष अथवा जीवन भर अपना जीवन जीने को ही व्रत मानते हैं और ऐसा करते भी हैं। यह कैसी विडम्बना है कि वेद–शास्त्रों के उपदेशों की अवज्ञा कर अपनी मनमानी करते हैं तथा सामान्य जनों को प्रभावित करके अपने समर्थक एवं अनुयायी बनाते हैं। यह सब वैदिक व्रत की मौलिक भावनाओं के बिल्कुल विपरीत है। ऋषि पत्नि अहिल्या जी ने सीता जी के माध्यम से स्त्रियों के कल्याण हेतु क्या बुढ़िया पुराण की कहानियों के व्रत रखने का उपदेश किया था? आज जो समाज में व्रत माने या रखे जाते हैं ऐसा कोई व्रत उपदेश उन्होंने नहीं दिया। यह सब उस महान् महिला के लिये मिथ्या मान्यता थी। उन्होंने सीता को वैदिक व्रत धारण करने का उपदेश दिया था। यथा

एक ही धर्म एक व्रत नैमा। काय, वचन, मन, पति पद प्रैमा।।

विनुश्रम नारि परम् गति लहईं। पति व्रत धर्म, छाँड़ि छल गहईं।।

अर्थात्– तन, मन और वचन से पति के चरणों में प्रेम करना ही एक सत्य व्रत है और यही नारी का धर्म है। अभिप्राय यह है कि शरीर से पति की सेवा तथा आज्ञा पालन करना, मन में सद्भावना और वाणी से मधुर बोलना। जो स्त्री इस पति व्रत धर्म का छल छोड़कर सत्य निष्ठा से पालन करती है वह बिना परिश्रम के परम् गति को प्राप्त होती है। पति ने जिन सत्य व्रतों को धारण किया है उन व्रतों की अनुवर्ती बनने की शक्ति–भक्ति का नाम पतिव्रता है।

श्री मद्भगवद्गीता में भी सत्य व्रत का ही उल्लेख है। यथा– ''यतयः संशित व्रताः (४–२८), जिन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि तीक्ष्ण व्रत पालन के नियम भलीभाँति धारण कर रखे हों, ऐसे यत्नशील पुरुषों को ''संशित व्रताः कहते है। योगदर्शन शास्त्र के अष्टांग योग में 'यम, प्रथम अंग है। उपरोक्त–अहिंसादि ५ यम के भाग है। महर्षि पातंजलि ने यम के इन ५ पाँच भागों के व्रतों को ''महाव्रत,, की संज्ञा दी है। यथा जाति देश काल सम यानव छिन्नाः सार्व भौम महाव्रतम् (सूत्र ८२) अर्थात् अहिंसादि यम, जाति, देश, काल के बन्धन रहित हैं तथा ये सार्वभौम महा व्रत है।

व्रतों के पालन कर्त्ता के समक्ष अनेक विघ्न–बाधाएँ आती हैं जो व्रती के कर्त्तव्य मार्ग को बाधित करतीं हैं किन्तु दृढ़ निश्चयी साधक चाहे कितने ही द्वन्द्व प्रलोभन, कष्टादि क्यों न हों, वे अपने कर्त्तव्य मार्ग पर डटे रहते हैं। ऐसे व्रती पुरुष को गीता में ''दृढवताः'' कहा गया है। एक कवि का दृढवताः, व्रती के बारे में कथन है–

कवहुँ भूमि कठोर पै राति कटै, कब हूँ परियंक बिछावत है।

कवहुँ दिन शाक को खाय कटै, कवहूँ पकवान उड़ावत है।।

कवहूँ गुदड़ी सों ही देह ढके, कवहूँ पट रेशम पावत है।

'व्रतशील, सदा निज लक्ष्य लखें, दुःख द्वन्द्व उन्हें न सतावत है।।

अतः हमें चाहिये कि हम व्रत के वास्तविक स्वरूप को समझें और मानें। वैदिक व्रत अर्थात् सत्य व्रत ही धारण और पालन करने योग्य हैं। व्रतों की सफलता के लिये प्रभु को अपना सहयोगी मित्र बनाना अत्यन्त आवश्यक है। अपने प्रत्येक कर्म को प्रभु से जोड़ कर करने का यदि हमारा स्वभाव बन जाये तो– असफलता, अवनति कभी पास फटक भी नही सकतीं। एक शायर का कथन है– मैं नहीं कहता कित दुनिया से जुदा हो। किन्तु हर काम में बस यादे खुदा हो।। अपनी वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति के निमित्त सहज साध्य व्रतों को ही धारण करें तथा तन की दृढ़ता से, मन की निर्मलता से व बुद्धि की तीव्रता से पालन करें।

– पुराना बाजार बाड़ी, जिला–धौलपुर (राज.)
(05647)- 224295

भाग्य से कर्म बड़ा होता है

– श्री खुशहालचन्द्र आर्य

कर्म से भाग्य बनता है न कि भाग्य से कर्म बनता है। इसलिए यदि कर्म पिता है तो भाग्य बेटा, यदि कर्म गुरु है तो भाग्य शिष्य। कर्म बीज है तो भाग्य वृक्ष। भाग्य अच्छे या बुरे कर्मों का संग्रह है, जो आगे भाग्य बनकर काम आता है। कर्म, कमाई या आमदनी करने का स्रोत है तो भाग्य कमाई की हुई पूँजी है जिसे हम आगे के जीवन में प्रयोग करते हैं या वर्तते हैं। यह पूंजी जो बनी है वह कर्म या श्रम करने से ही बनी है। इसलिए संग्रहित किये हुए कर्म ही भाग्य कहलाते हैं। जैसे श्रम से कमाए हुए पैसे बचाने से पूंजी बनती है, वैसे ही कर्म बचाने से भाग्य बनता है। जैसे मान लीजिए आप श्रम करके एक सौ रुपये प्रतिदिन कमाते हैं जिसमें से आप पच्चास रुपये अपने परिवार पर प्रतिदिन खर्च कर देते हैं और दस रुपये धर्म के काम में लगा देते हैं। तब आपके पास चालीस रुपये बचते हैं। यही चालीस रुपये एक महीने में बारह सौ रुपये और एक वर्ष में अन्दाजन पन्द्रह हजार रुपये हो जाते हैं। यह आपकी पूंजी हो गई। इसी प्रकार आप अपने जीवन में अच्छे या बुरे कर्म करते हो, उनमें कुछ कर्म ऐसे होते हैं जिनका फल हाथों हाथ मिल जाता है, तो वह कर्म यही समाप्त हो गया जैसे किसी ने चोरी की और वह पकड़ा जाने से, उसको एक साल की कैद हो गई, कैद से छूटने के बाद इस कर्म का फल इसको यहीं मिल गया अब यह कर्म यहीं समाप्त हो गया। कुछ कर्म अच्छे या बुरे ऐसे होते हैं जिसका फल हाथोंहाथ नहीं मिलता, उनका फल मिलना बाकी रह जाता है जिनको संग्रहित या संचित कर्म कहते हैं। उनका अच्छा या बुरा फल या तो वृद्ध अवस्था में मिलता है या फिर आगे की योनियों में मिलता रहता है। इन्हीं संग्रहित कर्मों को ही हम भाग्य कहते हैं जो तत्काल दिखाई नहीं देता। जैसे किसी को कहते हैं कि फलां व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली है जो किसी बड़े साहूकार या किसी राजा के घर पैदा हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि उसने पिछले जन्म में बहुत अच्छे कर्म किये थे जिससे वह अच्छे घर में पैदा हुआ। इसी प्रकार यदि कोई दरिद्र के घर या कसाई के घर पैदा होता है तो उसने भी पिछले जन्म में बुरे काम अधिक किये थे, जिससे उसका ऐसा घर मिला।

वैसे तो कर्म का विषय बहुत गहरा और पेचीदा है। ईश्वर ही इस विषय को पूर्णतः जानते हैं जो जीवों को उनके कर्मानुसार फल या योनि देता है। मनुष्य तो अपनी तर्क बुद्धि से थोड़ा सोचता है या कुछ धार्मिक पुस्तकों में कुछ संकेत मिल जाने हैं, उनके आधार पर यह कर्म की एक अवधारणा या कल्पना बना लेता है उसी के अनुसार यह मान्यता है कि मनुष्य अपने जीवन में पच्चास प्रतिशत अच्छे और इतने ही बुरे कर्म करता है तब उसको एक साधारण मनुष्य योनि मिलती है। इसके पश्चात् वह जीव पच्चास प्रतिशत से जितने अधिक अच्छे व शुभ कर्म करेगा उतनी ही उसको अच्छी मनुष्य योनि मिलती जायेगी। जब वह जीव अपने जीवन में अपने स्वार्थ के काम न करके सभी काम परमार्थ दृष्टि से निष्काम कर्म करेगा, साथ ही अष्टांग योग द्वारा ईश्वर की उपासना करते हुए समाधि में पहुंच कर मृत्यु के बाद दूसरा जन्म न लेकर मोक्ष को प्राप्त कर लेगा जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। यदि जीवन में पच्चास प्रतिशत से अधिक बुरे कर्म किये तो वह पशु-पक्षियों की योनि में जायेगा और जितने अधिक बुरे कर्म करेगा तो उसको उतनी ही नीचे की योनि कीट-पतंगों की मिलती जायेगी। इसलिए मनुष्य को अच्छे कर्म करते हुए मोक्ष पाने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। मोक्ष में जीव एक लम्बी अवधि तक ईश्वर के सानिध्य में परम आनन्द की स्थिति में रहता है और मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष है जो सृष्टि और प्रलय के छत्तीस हजार बार करने के बराबर है। इसके बाद जीव पुनः धरती पर मनुष्य योनि में आता है। मोक्ष की अवधि बताना महर्षि दयानन्द की देन है। इन्होंने कहा कि जब कार्य करने की अवधि होती है। तो उसके फल की अवधि भी अवश्य होनी चाहिए चाहे लम्बी कितनी भी हो तब महर्षि ने वेदों के आधार पर यह अवधि बताई। इससे पहले मुक्ति (मोक्ष) का अर्थ हमेशा के लिए मुक्त होना ही समझते थे।

वेद भी कर्म करने की ही प्रेरणा देता है यजुर्वेद का एक प्रसिद्ध मन्त्र है ''ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। अर्थ :- इस संसार में यज्ञादि धर्मयुक्त वेदोक्त निष्काम श्रेष्ठ काम करते हुए हम सौ वर्ष की आयु प्राप्त करें। परमात्मा की आज्ञानुसार शुद्ध आहार बिहार तथा आचार-विचार से शुभ कर्मों को करते हुए, अशुभ कर्मों को छोड़ते हुए ज्ञान विज्ञान, धन-धान्य को प्राप्त करें। काम न करने वाले के लिए ऋग्वेद में एक मन्त्र बहुत कठोर दण्ड देने का विधान का आता है। वह इस भांति है'' अकर्मा दस्यु रभि नो अयन्त रन्यव्रतो अमानुषः। त्वं तस्या मित्र हन्वधर्दा सस्य दम्मय।। अर्थ :- जो कर्म नहीं करता वह दस्यु है। उसको कोई सुख नहीं होवे, जो व्रतहीन है, वह मनुष्य नहीं है। हे न्यायधारी ईश्वर! तुम शत्रुओं के समान उनका वध कर दो अथवा दास के समान उस पर अनुशासन करो। भगवान् कृष्ण ने भी गीता में कहा है 'अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभम्' किये हुए शुभ व अशुभ कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। बाबा तुलसीदास ने भी अपने दो दोहों से धर्म की प्रधानता बताई है। दोहे इसी भांति हैं। (1) कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहिं सो तस फल चाखा।। (2) सकल पदारथ है जग माहीं कर्म हीन नर पावत नाहीं।। इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक धर्म, आर्य संस्कृति व वैदिक दर्शन, सब हमें पुरूषार्थ व काम करने का पाठ पढ़ाते हैं। आलस्य, अकर्मण्यता, प्रमाद, पुरूषार्थ हीनता आदि की घोर निन्दा करते हैं। इसलिए हमें जीवन में कर्मशील बनकर ही रहना चाहिए।

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि जीव जब एक योनि छोड़कर दूसरी योनि में जाता है तब उसको अपने किये कर्मों का फल जाति, आयु व भोग में ईश्वर देता है, यानि उसके संचित अच्छे या बुरे कर्मों का फल उसे मृत्यु के बाद दूसरी योनि में जिस जाति यानि मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली, गाय आदि में भेजता है तब जाति के रूप में देता है। जाति मिलने के बाद इसे भोग और आयु इसके धर्मानुसार देता है। भोग का तात्पर्य होता है कि जिस जाति में इसे भेजा है, वहां इसे खाने-पीने, रहने के लिए उसे क्या मिलेगा तथा दुःख-सुख कितना और कैसे मिलेगा। आयु का तात्पर्य होता है कि इस योनि में उसको कितने समय तक रहना पड़ेगा। यह तीनों चीज, ईश्वर जीव को अगली योनि देते समय निर्धारित कर देता है। जाति तो जीव की बदलती नहीं पर आयु और भोग संयम से बढ़ सकते हैं और असंयम से चलने से घट सकते हैं। आयु के लिए यह बात जानना जरूरी है कि आयु जीव को समय यानि वर्ष महीने, दिनों में नहीं देता बल्कि श्वासों की गिनती से देता है। मान लो किसी व्यक्ति को बीस करोड़ श्वास साठ साल के लिए दिये। यदि वह व्यक्ति अपने ब्रह्मचर्य से या सयंमी जीवन से इन श्वासों को सत्तर वर्षों में भी खर्च कर सकता है और असयंमी या अनियमित जीवन से उसे पच्चास वर्षों में भी खर्च कर सकता है। भोग भी इसी प्रकार घट-बढ़ सकते हैं। जैसे किसी व्यक्ति को ईश्वर ने इसके पूर्व अच्छे कर्मों के अनुसार किसी धनवार के घर जन्म दे दिया जिसके पास खाने-पीने की सब सामग्री उपलब्ध है। परन्तु वह अपनी अनियमितता या असंयम से बीमार पड़ जाता है तो उसकी भोग सामग्री बदल जायेगी। इस प्रकार आयु और भोग बदले जा सकते हैं।

अब प्रश्न एक यह उठ सकता है कि आत्म हत्या करने वाले के लिए तथा दुर्घटना से अकाल मृत्यु वालों के लिए ईश्वर की क्या व्यवस्था है। इसका उत्तर देने से पहले यह बतलाना जरूरी है कि मनुष्य जो कुछ करता जाता है उसे ईश्वर जानता रहता है, पर एक क्षण बाद वह क्या करेगा, इस बात को जानना ईश्वर के लिए कोई जरूरी नहीं है कारण मनुष्य काम करने में स्वतन्त्र है। मनुष्य क्या करेगा, यदि यह बात ईश्वर जानने लगे तो मनुष्य की स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है। वह जो कुछ करेगा उसका फल ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार दे देगा। अब रही बात आत्म हत्या की। आत्म हत्या दुःखी व्यक्ति ही, दुःखों से छुटकारा पाने के लिए करता है। परन्तु ईश्वर की न्याय व्यवस्था में उस आत्म हत्या करने वाले व्यक्ति को इस जीवन की बाकी आयु और वही दुःख जो इस जन्म में पा रहा था, वे सब उसे अगले जन्म में मिलते हैं। इसलिए आत्म हत्या करने से कोई लाभ नहीं। समझदारी यही है कि वे दुःख इसी जीवन में भोगकर इनसे मुक्ति पा लेना चाहिए। दुर्घटना से मरने वालों को भी ईश्वर उनकी बाकी उम्र अगले जन्म में दे देता है।

लोगों को यह भ्रम है कि अकाल मृत्यु पाने वालों को ईश्वर उसकी बाकी उम्र तक उस भूत-प्रेत की योनि में रखता है। यह मानने वालों की भूल है। भूत प्रेत कोई योनि नहीं। भूत का अर्थ है 'बीता हुआ' और प्रेत का अर्थ है 'शव' जिसको अभी जलाया नहीं गया है। इनका गलत अर्थ लगाया गया है अकाल मृत्यु पाने वालों का भी नया जन्म ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार बहुत शीघ्र ही हो जाता है, इसके लिए वेदों में अनेकों मन्त्र आते हैं, पर विस्तार के भय से यहां लिखना असम्भव है।

द्वारा गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
180, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-700006
दूरभाष :-
(033)-221838250/2657689003

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232	– मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248	– मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन	– पृष्ठ 240	– मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156	– मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278	– मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्रावणी पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनायें सभी आर्य समाजें राष्ट्रभृत यज्ञों का भव्य आयोजन करें

श्रावणी पर्व के अवसर पर सभी आर्यजन आने वाले वर्ष 2024 में स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती भव्यता से मनाने का संकल्प लें – स्वामी आर्यवेश

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्व रखते हैं। इस वर्ष 11 अगस्त, 2022 को श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 18 अगस्त, 2022 को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर युवा हृदय सम्राट आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम आम जनमानस को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा वेद ज्ञान को घर-घर पहुंचा सकते हैं। श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत सभी आर्यजनों को यह संकल्प दिलवाया जाये कि आने वाले वर्ष 2024 में स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की 200वीं जयन्ती को भव्यता के साथ मनाने के लिए अभी से तैयारी करना प्रारम्भ कर दें, तथा अपने सामर्थ्य अनुसार तन-मन-धन से सहयोग करें।

आज देश अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त है। भयंकर भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अव्यवस्था, गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई, नशाखोरी तथा अन्धविश्वास एवं पाखण्ड जैसी समस्याएँ विकराल रूप धारण कर चुकी हैं। कन्या भ्रूण हत्या, गो-हत्या, दहेज, अश्लीलता आदि देश की ऐसी ज्वलन्त समस्याएँ हैं जिससे हमारी पूरी संस्कृति ही नष्ट हो रही है। वर्तमान समय में देश में पाखण्ड एवं अन्धविश्वास का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। आर्य समाज सदैव से बुराईयों के खिलाफ आगे बढ़कर लड़ाई लड़ता रहा है। इन विषम परिस्थितियों से आर्य समाज ही एक मात्र संगठन है जो मुक्ति दिला सकता है। अतः इस श्रावणी महापर्व पर प्रत्येक आर्य समाज राष्ट्रभृत यज्ञों का भव्य आयोजन करें। पूरी मानवता का प्रहरी होने के नाते आर्य समाज का दायित्व है कि इन सभी समस्याओं के निराकरण के लिए प्राथमिकता के आधार पर योजनाएँ बनाकर क्रियान्वयन किया जाये।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर राष्ट्रभृत यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिए जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का व्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

इसी प्रकार वृक्षारोपण का कार्य भी किया जाये। प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम सब आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

18 अगस्त, 2022 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा योगीराज श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे योगीराज श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में हमने वेद ज्ञान को जन-जन के हाथों में, प्रत्येक परिवार में, पुस्तकालयों में, विद्यालयों तथा कालेजों की लाइब्रेरियों में पहुंचाने का संकल्प लेकर लगातार प्रकाशित कराकर सस्ते मूल्य पर निरन्तर उपलब्ध कराने का कार्य कर रहे हैं। इस वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के पास वेद पहुंचाने का यत्न करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को भी प्रेरित करें कि वे इस योजना का लाभ उठायें।

श्री विवेक मलिक एडवोकट एवं प्रसिद्ध व्यवसायी श्री विशाल मलिक की पूज्य माता जी श्रीमती सुमित्रा मलिक का असमय निधन

शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 अगस्त, 2022 को प्रातः 10 बजे होगी

श्रद्धांजलि सभा स्थल – मलिक फार्म हाऊस, ग्राम–हसनपुर, तावडू रोड, निकट–वेस्ट वेर्स्टन, कन्ट्री क्लब, जिला–गुरुग्राम (हरि.)

श्री विवेक मलिक एडवोकेट एवं प्रसिद्ध व्यवसायी श्री विशाल मलिक की माता श्रीमती सुमित्रा मलिक जी का गत् 25 जुलाई, 2022 को असमय निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक परम्परा के साथ 25 जुलाई, 2022 को सायंकाल लगभग 5 बजे मलिक फार्म हाऊस, ग्राम–हसनपुर, पंचगांव तावडू रोड में किया गया। माता जी सुशिक्षित एवं धर्मपारायणा गृहणी थीं। उनके दोनों सुपुत्र श्री विवेक मलिक तथा श्री विशाल मलिक सुशिक्षित तथा संस्कारों से ओत–प्रोत हैं। माता जी का निधन निःसंदेह परिवार तथा समाज की अपूर्णीय क्षति है। माता जी की स्मृति में दिनांक 5 अगस्त, 2022 को शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है। श्रद्धांजलि सभा में आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त अन्य संन्यासी, विद्वान् तथा गणमान्य महानुभाव उपस्थित होकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।